بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 12.09.25

वर्ष 8 हिजरी में होने वाले कुछ युद्धों एवं सैन्य अभियानों के परिवेश में

नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (तबूक तिथि 12,1404 हश)12 .09. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हुनैन की लड़ाई के हवाले से चर्चा कर रहा था, इसका और अधिक विस्तृत वर्णन इस प्रकार है कि हुनैन के युद्ध में भी अल्लाह तआला की ओर से ऐसी सेनाओं के नाज़िल किए जाने का वर्णन मिलता है जिन्हें फरिश्तों का समरूप कहा जाता है। क़ुरान के टीकाकारों एवं सीरत के संकलन कर्ताओं ने इस युद्ध में फरिश्तों के उतरने के विषय में भिन्न भिन्न चर्चाएँ की हैं। सही रिवायत से प्रतीत होता है कि फ़रिश्ते इस युद्ध में वास्तविक रूप में सम्मिलित हुए, परन्तु यहाँ एक प्रश्न उठता है कि सहायता के लिए तो एक ही फ़रिश्ता पर्याप्त था, तो हज़ारों फ़रिश्ते क्यूं अवतरित हुए। इमाम इब्ने कसीर रह. लिखते हैं कि अल्लाह की ओर से फरिश्तों का आना तथा मुसलमानों को इसकी सूचना एक ख़ुशख़बरी के रूप में थी, अन्यथा अल्लाह तआला इसके बिना भी अपने दुश्मनों के विरुद्ध मुसलमानों की सहायता कर सकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने भी यह बात बयान फ़रमाई है कि क़ुरआन में फरिश्तों के सहायता करने की घटना का वर्णन है ताकि मोमिनों के दिलों को ठंडक पहुंचे और मुक़ाबले में उन्हें कोई भय न हो।

अतएव अल्लाह तआला ने क़ुरआन में मोमिनों से वादा किया तथा उन्हें शुभ सूचना दी कि वह पांच हज़ार फ़रिश्तों से उनकी सहायता करने को आएगा। इस संख्या को अधिक करके इस लिए दिखाया ताकि उनके लिए ख़ुश-ख़बरी हो।

दुश्मन की पराजय तथा वहाँ से भाग जाने के विषय में पहले ये विवरण बयान हो चुका है कि बनू हवाज़न जो वास्तव में अरब देश के सर्वशक्तिमान क़बीलों में से था, जिनका यह दावा था कि आज तक मुहम्मद (ﷺ) का मुक़ाबला किसी यौद्धा क़ौम से हुआ ही नहीं, हमसे मुक़ाबला होगा तो हम बताएंगे कि युद्ध क्या होता है, वे थोड़ी ही देर में पराजित होकर भागे और अपने बीवी बच्चों एवं धन सम्पत्ति की किसी को ख़बर न रही। हवाज़न के भाग जाने के बावजूद क़बीला सक़ीफ़ के यौद्धा डटे रहे तथा अत्यंत वीरता के साथ लड़ते रहे, यहाँ तक कि उनके सत्तर लोग मारे गए। उनका सबसे अन्तिम झंडावाहक उस्मान बिन अब्दुल्लाह था, जब वह मारा गया तो फिर सक़ीफ़ भी भाग गए।

इस युद्ध में चार सहाबी शहीद हुए, उनके नाम इस प्रकार हैं- हज़रत उम्मे ऐमन रज़ी. के बेटे ऐमन बिन उबैद रज़ी, सुराक़ा बिन हारिस रज़ी, यज़ीद बिन ज़मआ रज़ी. तथा चौथे हज़रत अबू आमिर रज़ी. थे। एक रावी बयान करते हैं कि जब काफ़िरों की हार हो गई और मुसलमान अपने अपने तम्भुओं की ओर चले गए तो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि आप स. लोगों के बीच में से होकर जा रहे थे और फ़रमा रहे थे कि मुझे ख़ालिद बिन वलीद तक कौन पहुंचाएगा? जब उनके पास पहुंचे तो ख़ालिद कजावे के साथ टेक लगाए हुए थे, हुज़ूर स. ख़ालिद के पास बैठ गए और घाव पर अपने पवित्र मुख की लार लगाई, जिससे वे ठीक हो गए। इसके अतिरिक्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ी, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी, हज़रत उसमान रज़ी. और हज़रत अली रज़ी. को भी घाव लगे थे।

आरम्भ में जब हुनैन के मैदान से कुछ मुसलमान भागे तो उनमें से कुछ मक्का चले गए और वहाँ यह बताया कि मुसलमान युद्ध हार चुके हैं और मुहम्मद स. नऊज़ुबिल्लाह मारे गए हैं। इस ख़बर से मक्के में मौजूद मुनाफ़िक़ तथा जिन लोगों के दिलों में ईर्षा थी, वे बड़े ख़ुश हुए और कहने लगे अब अरब के लोग अपने पूर्वजों के दीन पर वापस आजाएंगे। अभी थोड़ी ही देर बीती थी कि हुनैन से यह ख़ुश ख़बरी भी आ गई कि मुसलमानों को विजय मिली है और बनू हवाज़न घोर पराजित होकर भाग गए हैं।

मक्का पर विजय के वर्णन से ठीक पहले ख़ुत्बे में इज़्म नामक सरिय्ये के वर्णन के अंतर्गत यह बात आई थी कि एक सहाबी महल्लिम बिन जुसामा ने एक ऐसे व्यक्ति की हत्या कर दी कि जिसने रास्ते में अस्सलाम अलैकुम कहा था। इस घटना की कुछ और बातें भी बयान की जाती हैं, वे ये हैं कि हुनैन नामक युद्ध के बाद आँहज़रत स. ताएॅफ़ नामक युद्ध के लिए रवाना हो रहे थे कि एक दिन ज़ोहर

की नमाज़ के बाद उयीना बिन हिस्न ने मृतक आमिर बिन अज़बत अशजयी की हत्या का बदला माँगा। अक़रा बिन हाबिस जो महल्लिम बिन जुसामा को बचाना चाहता था, इन दोनों ने आप स. के सामने विवाद शुरू कर दिया। आँहज़रत स. ने बात चीत करने के बाद उयीना को हत्या के बदले धन स्वीकार करने के लिए तय्यार कर लिया। बदले की धन राशि को निश्चित करने के बाद महल्लिम उठ कर आँहज़रत स. के पास बैठ गया, उसकी आँखों से आंसू जारी थे। उसने निवेदन किया कि जो बात आप स. तक पहुँची है, हुज़ूर मैं उससे तौबा करता हूँ, आप स. भी मेरे लिए क्षमा की दुआ फरमाएं। आप स. ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा महिल्लम बिन जुसामा। आप स. ने फ़रमाया कि क्या तुमने शुरू इस्लाम में ही उसकी हत्या कर दी, और आप स. उच्च स्वर में कहा कि ऐ अल्लाह! महिल्लम को क्षमा मत करना, यह वाक्य सबने सुना। उसने दोबारा कहा कि या रसूलुल्लाह स. मैं क्षमा चाहता हूँ। आप स. भी मेरे लिए क्षमा की दुआ करें। आप स. ने फिर उच्च स्वर में कहा ताकि लोग सुन लें कि ऐ अल्लाह! महिल्लम बिन जुसामा को माफ़ न करना, और उसने तीसरी बार फिर कहा, और आप स. ने तीसरी बार भी वही कहा, फिर रसूलुल्लाह स. ने उसे फ़रमाया कि मेरे सामने से उठ कर चले जाओ। इब्ने इस्हाक़ की भी एक रिवायत है कि इस क़ौम के लोग बयान करते हैं कि बाद में आँहज़रत स. ने उसकी क्षमा के लिए भी दुआ की थी।

सरिय्या ओतास का विवरण इस प्रकार है कि बनू हवाज़न चूंकि अपने बीवी बच्चे और सारे पशु एवं धन सम्पत्ति को साथ में लेकर आक्रमण के लिए आए थे, ख़ुद तो भाग गए और अब यह सब कुछ माले ग़नीमत के रूप में मुसलमानों के हाथ आ गया। नबी अकरम ﷺ ने हज़रत अबू आमिर अशअरी रज़ी. के नेतृत्व में एक दल उनका पीछा करते हुए औतास की ओर रवाना फ़रमाया। इस दल में अबू मूसा अशअरी रज़ी और सलमा बिन अकूअ रज़ी. भी थे। हज़रत अबू आमिर रज़ी. ने दुश्मन को लड़ने के लिए पुकारा। वहाँ दुश्मनों के दस भाई थे जो युद्ध में अत्यन्त कुशल होने के कारण प्रसिद्ध थे। ये दस भाई लड़ने के लिए निकले। अबू आमिर रज़ी. ने इनमें से हर एक को पहले इस्लाम की दावत दी परन्तु उन्होंने मुक़ाबला करने को प्राथमिकता दी, और वे मारे गए। यूं एक के बाद एक नौ भाई मारे गए। दसवां भाई जो था, बाद में इस्लाम ले आया था और कहा जाता है कि बहुत अच्छा मुसलमान हुआ। अतएव हज़रत अबू आमिर रज़ी. इसी प्रकार दलेरी से लड़ते रहे, इस बीच एक तीर उनके सीने में लगा और एक घुटने में लगा, घाव अधिक होने के कारण आप रज़ी. जीवित न रह सके। अबू मूसा अशअरी रज़ी. ने इन लोगों से युद्ध किया और दुश्मन पराजित होकर वहाँ से भाग गया।

फिर तुफ़ैल बिन उमरू दोसी रज़ी. के नाम से एक सरिय्या का वर्णन है। यह शव्वाल आठ हिजरी में हुआ। आँहज़रत ﷺ जब हुनैन से ताएँफ़ की ओर चलने लगे तो आप स. ने तुफ़ैल दोसी रज़ी. को ज़ुलकिफ़ैन नाम के बुत की प्रतिमा को गिराने के लिए भेजा। आँहज़रत ﷺ ने उनको

उपदेश दिए कि इस्लाम ख़ूब फैलाना अर्थात शान्ति को सार्वजनिक कर दे ना, लो गों को खाना खिलाना, अल्लाह ताला से इस प्रकार शर्मना जिस प्रकार एक प्रतिष्ठित आदमी अपने घर वालों से शर्माता है। जब भी कोई ग़लती अथवा पाप हो जाए तो उसके बाद तुरन्त नेक कर्म कर लिया करना, क्यूंकि शुभ कर्म पापों को भस्म कर देती हैं। और फिर फ़रमाया कि अपनी क़ौम के लोगों को साथ लेना और यह काम पूरा करके वापस ताएॅफ़ चले आना। अतः आप रज़ी. ने अपनी क़ौम के चार सौ लोगों को साथ लिया और लकड़ी के बने हुए उस बुत को आग लगा कर जला दिया।

ताएॅफ़ नामक युद्ध, यह भी शव्वाल 8 हिजरी में हुआ। ताएॅफ़ अत्यंत सुदृढ़ स्थान था। आप स. ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के नेतृत्व में एक हज़ार सेना का अग्रिम दल रवाना किया, उन्होंने वहाँ पहुँच कर ताएॅफ़ वालों से सन्धि का प्रयास किया, किन्तु वे तय्यार न हुए। तत्पश्चात आँहज़रत ﷺ ने ख़ुद भी ताएॅफ़ जाने का निश्चय किया। नबी अकरम ﷺ ने आरम्भ में ताएॅफ़ के अत्यंत निकट एक खुले स्थान पर डेरा डाला। अभी सेना ने सम्पूर्ण रूप से निवास भी न किया था कि क़िले से तीर चलाने वालों ने तीरों की वर्षा करके अनेक मुसलमानों को घायल कर दिया। घेराव के चलते दोनों ओर से तीर और पत्थर बाज़ी होती रही। इस अवस्था से निपटने के लिए आँहज़रत ﷺ ने मन्जनीक़ (पत्थर फेंकने वाला एक प्रकार का यंत्र) लगा कर ताएॅफ़ वालों पर बड़े बड़े पत्थर फेंके। इसी बीच आँहज़रत ﷺ ने एक बार ताएॅफ़ वालों के अंगूरों के बाग़ों को काटने का भी निर्देश दिया। मेरा विचार है कि यह अन्तिम चेतावनी थी जो डराने के लिए सामान्य रूप से उपयोग में लाई गई होगी। क्यूंकि बाद में निरस्त भी कर दिया था। आँहज़रत ﷺ और सहाबा रज़ी. आधे महीने अथवा उससे भी अधिक समय तक ताएॅफ़ वालों के साथ युद्ध में लगे रहे परन्तु हुनैन की पराजय का ऐसा भय एवं रौब उनके दिलों पर बैठ चुका था कि वे किले के अन्दर से ही लड़ते रहे और बाहर नहीं निकले।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों मुकर्रम डा. सय्यद शहाब अहमद साहब (जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. के सहाबी हज़रत सय्यद इरादत हुसैन साहब रज़ी. आफ़ बिहार प्रदेश के नवासे थे) और मुकर्रम मुबारक खोखर साहब लाहौर के सदगुणों गुणों को बयान फ़रमाया तथा जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और दोनों के लिए मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब